

प्रेषक,

शैलेश बगौली,  
सचिव,  
उत्तराखण्ड शासन।

सेवामें,

निदेशक,  
पर्यटन निदेशालय,  
उत्तराखण्ड, देहरादून।

पर्यटन अनुभाग

देहरादून दिनांक 23 नवम्बर, 2016

**विषय:-**राज्य सेक्टर की पर्यटन विकास की नई योजनाओं के अन्तर्गत जनपद पिथौरागढ़ में प्रस्तावित योजनाओं की वित्तीय स्वीकृति के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-247/2-6-471/2016-17, दिनांक 5 सितम्बर, 2016 के कम में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि राज्य सेक्टर की पर्यटन विकास की नई योजनाओं के अन्तर्गत "जनपद पिथौरागढ़ के अन्तर्गत धमौड़ा में सिद्धेश्वर महादेव पर्यटन स्थल का विकास" हेतु निर्माण इकाई ग्रामीण निर्माण विभाग की विभागीय टी0ए0सी0 द्वारा संस्तुत लागत ₹ 30.00 लाख की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति सहित चालू वित्तीय वर्ष 2016-17 में पर्यटन विकास की नई योजना मद में प्रावधानित धनराशि ₹ 100.00 लाख (₹ एक करोड़ मात्र) में से ₹ 12.00 लाख (₹ बारह लाख मात्र) की वित्तीय स्वीकृति प्रदान करते हुए निम्नलिखित शर्तों/प्रतिबन्धों के अधीन व्यय किये जाने हेतु आपके निवर्तन पर रखे जाने की श्री राज्यपाल महोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

- (i) कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व विस्तृत आगणन/मानचित्र पर सक्षम अधिकारी से प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त करनी आवश्यक होगी।
- (ii) कार्य पर मदवार उतना ही व्यय किया जाय जितनी मदवार धनराशि स्वीकृत की गयी है। स्वीकृत धनराशि से अधिक व्यय कदापि न किया जाए तथा एक मद की धनराशि दूसरे मद में कदापि व्यय न की जाय।
- (iii) कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व स्थल का मृदा परीक्षण एवं भू-गर्भीय परीक्षण अनिवार्य रूप करा लिया जाय।
- (iv) कार्य करने से पूर्व समस्त औपचारिकतायें तकनीकी दृष्टि को मध्यनजर रखते हुए एवं विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य को सम्पादित करना सुनिश्चित करें।
- (v) निर्माण सामग्री को उपयोग में लाने से पूर्व सामग्री का परीक्षण प्रयोगशाला से अवश्य करा लिया जाये तथा विशिष्टियों के अनुरूप सामग्री ही प्रयोग में लायी जाये।
- (vi) विस्तृत आगणन में प्राविधानित डिजायन एवं मात्राओं हेतु सम्बन्धित कार्यदायी संस्था पूर्ण रूप से उत्तरदायी होंगे।
- (vii) स्वीकृत विस्तृत आगणन के प्राविधानों एवं तकनीकी स्वीकृति के आगणन के प्राविधानों में परिवर्तन (केवल अपरिहार्य स्थिति की दशा में ही) करने से पूर्व सक्षम अधिकारी की सहमति अनिवार्य रूप से प्राप्त कर ली जाये।
- (viii) व्यय करते समय उत्तराखण्ड अधिप्राप्ति नियमावली 2008 तथा इसके कम में समय-समय पर निर्गत दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया जायेगा।

- (ix) आवंटित धनराशि का उपभोग 31 मार्च, 2017 तक कर लिया जाय। अवशेष धनराशि समयान्तर्गत शासन को समर्पित कर दी जाय।
- (x) स्वीकृत की जा रही धनराशि का व्यय उन्ही मदों में किया जायेगा जिसके लिये यह स्वीकृत की जा रही है। मद परिवर्तन का अधिकार विभाग के पास नहीं होगा। बजट योजनावार आवंटन उसके विपरीत मासिक योजनावार व्यय का विवरण शासन को उपलब्ध करा दिया जायेगा।
- (xi) वित्तीय वर्ष के अन्त में कृत कार्य की वित्तीय एवं भौतिक प्रगति का विवरण एवं उपयोगिता प्रमाण पत्र भी शासन को उपलब्ध करा दिया जायेगा।
- (xii) मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन के शासनादेश संख्या-2047/XIV-219(2006), दिनांक 30 मई, 2006 द्वारा निर्गत आदेशों का कड़ाई से पालन करने का कष्ट करें।
- (xiii) कार्यदायी संस्था के निधारण में शासन द्वारा समय-समय पर निर्गत शासनादेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।

2- उपरोक्त व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2016-17 के आय-व्ययक में अनुदान संख्या-26 के लेखाशीर्षक 5452-पर्यटन पर पूंजीगत परिव्यय-80-सामान्य-आयोजनागत-104-संवर्धन तथा प्रचार-04-राज्य सेक्टर-49-पर्यटन विकास की नई योजनायें-24-वृहत् निर्माण कार्य मानक मद के नामे डाला जायेगा।

3- यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या-645/XXVII(2)/2016, दिनांक 10 नवम्बर, 2016 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

4- उक्त व्यय वर्तमान वित्तीय वर्ष 2016-17 के अनुदान संख्या-26 के अन्तर्गत अलोटमेंट आईडी-S.1611260205 द्वारा निर्गत किया जा रहा है।

संलग्नक-यथोपरि।

भवदीय,

(शैलेश बगौली)  
सचिव।

संख्या:- 2041/VI(1)/2016-03(20)/2016, तददिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

- 1- महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी, उत्तराखण्ड देहरादून।
- 2- वित्त अधिकारी, साइबर ट्रेजरी, 23 लक्ष्मी रोड, डालनवाला देहरादून।
- 3- आयुक्त कुमाऊँ मण्डल।
- 4- जिलाधिकारी पिथौरागढ़ को इस आशय से प्रेषित कि उक्त योजनाओं की मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने का कष्ट करें।
- 5- वित्त अनुभाग-2, उत्तराखण्ड शासन।
- ✓ 6- एन0आई0सी0, उत्तराखण्ड सचिवालय परिसर।
- 7- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(गरिमा रौकली)  
संयुक्त सचिव।

८८